टेक्सास-यू.एस.ए.। काउंसिल जनरल ऑफ इंडिया इन यू.एस.ए. डॉ. अनुपम रे तथा उनकी धर्मपत्नी डॉ. अमित गोल्डबर्ग को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् चित्र में उनके साथ क्षेत्रीय संयोजिका ब्र.कु. डॉ. हंसा रावल तथा ब्र.कु. मार्क।

फिरोज़ाबाद-उ.प्र.। जिला जज गोविंद बल्लभ शर्मा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सरिता। साथ हैं ब्र.कु. अंजना।

नाहन-हि.प्र.। आयुक्त सिरमौर ललित जैन को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. रमा।

टोंक -राज.। रक्षाबंधन के अवसर पर आयोजित 'स्नेह मिलन' कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. अपर्णा। मंचासीन हैं नगर परिषद सभापति श्रीमति लक्ष्मी जैन, जेल अधीक्षक बद्रीलाल शर्मा, के.सी. आहूजा, ब्र.कु. बीना तथा ब्र.कु. रितू।

बाघा पुराना-मोगा(पंजाब)। डी.एस.पी. रणजीत सिंह को राखी बांधने से पूर्व आत्मस्मृति का तिलक लगाते हुए ब्र.कु. रजनी।

रामपुर खारी कुआँ-बरेली(उ.प्र.)। सी.आर.पी. ग्रुप सेंटर में जवानों को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. प्रभा। साथ हैं ब्र.कु. रितू।

प्रसन्नता

पहले योगी हमेशा जंगलों और पहाड़ी की गुफाओं में जाकर रहते थे। वहाँ बैठने का उद्देश्य उन सभी सीमाओं के परे विकास करना था, जो अभी आपको बांधे हुए है। पेड़ों से सूक्ष्म विद्युत मिलती है, जिससे मन शक्तिशाली बनता है। पेड़ सभी प्रकार की नकारात्मक तरंगों को खत्म कर देते हैं। यही कारण है जितनी भी दवाइयां हैं, सभी पेड़ पौधों से ही बनती हैं। पेड़ों के नीचे बैठ कर तपस्या करते हैं तो पेड़ संकल्पों को पकड़ लेते हैं और ब्रह्माण्ड में प्रसारित कर देते हैं।

जब हम तनाव या गर्मी से सताये हुए होते हैं तो हरे भरे पेड़ों में जाने से मन को चैन मिलता है। वास्तविकता यह है कि पेड़ से निकली सूक्ष्म तरंगें मनुष्य को प्रभावित करती हैं। पेड़ों की आकर्षण शक्ति से बरसात भी होती है। वृक्षों की यह एनर्जी बहुत सूक्ष्म है, जिस पर खोज की ज़रूरत है। आज भी लोग पीपल तथा कुछ अन्य वृक्षों पर कच्चे धागे या मौली की गाँठ बांधते हैं ताकि उनकी अमुक मन्नत पूरी हो। यह धागा क्यों बांधा जाता है? हमारी अंगुलियों के पोरों, आंखों से और श्वास से, मन की एनर्जी जो हम सोचते हैं, प्रवाहित होती रहती है।

कच्चे धागे या मौली को हाथों से पकड़ते हैं, देखते हैं, संकल्प या मंत्र पढ़कर उस धागे को फूंक मारते हैं तो हवा उस धागे में रुक जाती है जो हमारे श्वास से निकली थी। इस हवा में हमारी मनोकामना के सूक्ष्म संकल्प कैद हो जाते हैं। धागे में से हवा बाहर नहीं निकलती। यह धागा पीपल पर बांधा जाता है। पीपल धागे के अंदर हवा में कैद सूक्ष्म तरंगों को पढ़ लेता है और उसे ब्रह्माण्ड में प्रसारित कर देता है। यह धागा एक कैसेट या पेन ड्राइव का काम करता है। धागे के अंदर बंद हवा में हमारी मनोकामना के विचार हर समय पेड़ के द्वारा ब्रह्माण्ड में प्रवाहित होते रहते हैं।

वृक्ष के नीचे साधना करते समय मन में जो एनर्जी बन रही होती है, एक तो सीधे भगवान के पास पहुंचती है, दूसरे वृक्ष भी उस एनर्जी को भगवान तक प्रसारित कर देते हैं। जिससे साधना में दोहरा फायदा होता है और हमें तीव्रता से दिव्य शक्तियां अनुभव होने लगती हैं। तीसरा हमारे शुद्ध संकल्प पेड़ द्वारा छोड़े जा रहे ऑक्सीज़न में प्रवेश कर जाते हैं और वह ऑक्सीज़न जिन लोगों तक पहुंचती है, उनकी मानसिक शुद्धता अनजाने में ही होने लगती है।

वृक्ष करते सूक्ष्म परोपकार के कार्य

- वृक्ष के नीचे साधना करते समय मन में जो एनर्जी बन रही होती है, वो सीधे भगवान के पास पहुंचती है।
- वृक्ष भी उस एनर्जी को भगवान तक प्रसारित कर देते हैं। जिससे साधना में दोहरा फायदा होता है और हमें तीव्रता से दिव्य शक्तियां अनुभव होने लगती हैं।
- हमारे शुद्ध संकल्प पेड़ द्वारा छोड़े जा रहे ऑक्सीज़न में प्रवेश कर जाते हैं और वह ऑक्सीज़न जिन लोगों तक पहुंचती है, उनकी मानसिक शुद्धता अनजाने में ही होने लगती है।

इसलिए ब्राह्मणों के लिए वर्जित है तामसिक भोजन

प्याज और लहसुन के बिना आपको खाना बेस्वाद लगता होगा, लेकिन कुछेक ब्राह्मण इससे दूरी बनाकर चलते हैं। ब्राह्मण प्याज और लहसुन से परहेज क्यों करते हैं, क्या आपके दिमाग में ये सवाल कभी कौंधा है? लोग इसके पीछे धार्मिक मान्यताओं का हवाला देते हैं, लेकिन कुछेक इसके पीछे वैज्ञानिक कारण भी बताते हैं। इस रिपोर्ट में हम आपको उन वजहों की जानकारी दे रहे हैं जिनके चलते ब्राह्मण प्याज और लहसुन से दूरी बनाते हैं।

आयुर्वेद में खाद्य पदार्थों को तीन श्रेणियों में बांटा गया है

1. सात्विक
2. राजसिक
3. तामसिक

मानसिक स्थितियों के आधार पर इन्हें हम ऐसे बांट सकते हैं

सात्विक : शांति, संयम, पवित्रता और मन की शांति जैसे गुण।

राजसिक : जुनून और खुशी जैसे गुण।

तामसिक : क्रोध, जुनून, अहंकार और विनाश जैसे गुण।

ये है वजह :

अहिंसा : प्याज और लहसुन तथा अन्य लशुनी पौधों को राजसिक और तामसिक रूप में वर्गीकृत किया गया है। जिसका मतलब है कि ये जुनून और अज्ञानता में वृद्धि करते हैं। हिंदू धर्म में हत्या (रोगाणुओं की भी) निषिद्ध है। जबकि ज़मीन के नीचे उगने वाले भोजन में समुचित सफाई की ज़रूरत होती है, जो सूक्ष्मजीवों की मौत का कारण बनता है। अतः ये मान्यता भी प्याज और लहसुन को ब्राह्मणों के लिए निषेध बनाती है, लेकिन तब सवाल आलू, मूली और गाजर पर उठता है।

अशुद्ध खाद्य : कुछ लोगों का ये भी कहना है कि मांस, प्याज और लहसुन का अधिक मात्रा में सेवन व्यवहार में बदलाव का कारण बन जाता है। शास्त्र के अनुसार लहसुन, प्याज और मशरूम ब्राह्मणों के लिए निषिद्ध हैं, क्योंकि आमतौर पर ये अशुद्धता बढ़ाते हैं और अशुद्ध खाद्य की श्रेणी में आते हैं। ब्राह्मणों को पवित्रता बनाए रखने की ज़रूरत होती है, क्योंकि वे देवताओं की पूजा करते हैं, जोकि प्रकृति में सात्विक (शुद्ध) होते हैं। और ब्राह्मण देवताओं या परमात्मा को जो भोग लगाते हैं, वो ही स्वयं भी स्वीकार करते हैं। तामसिकता की श्रेणी में आने वाले किसी भी पदार्थ का भोग देवताओं तथा परमात्मा को नहीं लगाया जाता और ना ही वे स्वीकार करते हैं।

सनातन धर्म के अनुसार : सनातन धर्म के वेद शास्त्रों के अनुसार प्याज और लहसुन जैसी सब्जियां प्रकृति प्रदत्त भावनाओं में सबसे निचले दर्ज़े की भावनाओं जैसे जुनून, उत्तेजना और अज्ञानता को बढ़ावा देती हैं, जिस कारण आध्यात्मिकता के मार्ग पर चलने में बाधा उत्पन्न होती है और व्यक्ति की चेतना प्रभावित होती है। इस कारण इनका सेवन नहीं करना चाहिए।

मान्यताएं : इन बातों का अब कम महत्व है, क्योंकि शहरी जीवन में तो प्राचीन परम्पराएं विलुप्त होने के कगार पर हैं और बेहद कम लोग ही इन नियमों का पालन करते हैं। आज के दौर के अधिकांश लोग, खासतौर पर युवा पीढ़ी इसे अंधविश्वास से जोड़कर देखती है या वर्तमान जीवनशैली के कारण इनका पालन नहीं कर सकती है। लेकिन आयुर्वेद के अनुसार साधू, सन्यासी, ब्रह्मचारी और सत्मार्ग पर चलने वाले व्यक्ति को लहसुन प्याज का सेवन नहीं करना है।

वैज्ञानिक तौर पर इन तामसिक पदार्थों में जैसे कि प्याज और लहसुन में सल्फ्यूरिक एसिड की मात्रा अधिक होने से वो हमारी पाचन शक्ति को प्रभावित करती है तथा आँतों को नुकसान भी पहुंचाती है। ऐसे ही तामसिक श्रेणी में आने वाले दूसरे पदार्थ भी जो मनुष्य के प्रकृति पर विपरीत असर डालते हैं, हमें उनका सेवन नहीं करना चाहिए। इसलिए यदि आप अपने जीवन में सुख, शांति और प्रेम जैसे गुणों को बनाये रखना चाहते हैं, तो इन चीज़ों से परहेज करना ही होगा, अन्यथा तामसिक पदार्थ अपना कार्य कर ही लेंगे।

मिरज़ापुर-उ.प्र.। सिटी मजिस्ट्रेट पंकज वर्मा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. बिन्दु।

जयपुर-वैशाली नगर। राजकुमारी साहिबा दिया कुमारी को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय वरदान कार्ड देते हुए ब्र.कु. सुष्मा तथा ब्र.कु. चन्द्रकला।

नरवाना-हरियाणा। एस.डी.एम. किरण सिंह को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. ममता।

मुज़फ्फरनगर-गांधीनगर(उ.प्र.)। जेल अधीक्षक ए.के. सक्सेना को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. पूनम।